विचार बिन्दु

गरीबों की सेवा ही ईश्वर की सेवा है। –सरदार वल्लभभाई पटेल

छात्रों पर भारी दबाव वाली कोचिंग संस्कृति पर नियंत्रण के प्रयास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 स्पष्ट रूप से मानती है कि देश की शिक्षा में कोचिंग संस्कृति बहुत नुकसान पहुंचा रही है। प्रतिस्पर्धी परीक्षाएं देने के लिए तैयारी की कोचिंग माध्यमिक विद्यालय स्तर का वह मूल्यवान समय ले रही है जो असली शिक्षा के लिए सुरक्षित होना चाहिए। सभी मानते हैं कि प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं की कोचिंग छात्रों को एक ही स्ट्रीम की सामग्री के बहुत ही संकीर्ण दायरे में सीखने के लिए मजबूर करती हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए शिक्षा मंत्रालय ने पिछले महीने देश में कोचिंग संस्थानों के संचालन के लिए दिशानिर्देश जारी किये हैं। इन निर्देशों के अनुसार कोचिंग सेंटरों को पंजीकरण कराना आवश्यक होगा। पहले कोचिंग संस्थानों का वाणिज्यिक कर विभाग में पंजीकरण होता था, लेकिन अब उन्हें संभवत: शिक्षा विभाग द्वारा मान्यता दी जाएगी। दिशानिर्देश यही एकमात्र संकेत देते हैं। यह दिशानिर्देश कहते हैं कि कोचिंग सेंटरों में स्नातक से कम योग्यता वाले ट्यूटर्स की नियुक्ति नहीं होगी, कोचिंग सेंटर भ्रामक वादे या रैंक या अच्छे अंक दिलाने की गारंटी नहीं देंगे, भ्रामक विज्ञापन नहीं करेंगे, 16 वर्ष से कम उम्र के छात्रों को भर्ती नहीं किया करेंगे और केवल हाई स्कूल परीक्षा के बाद ही दाखिला देंगे, प्रति छात्र न्यूनतम स्थान उपलब्ध कराएंगे तथा नैतिक दुराचरण से जुड़े किसी अपराध के दोषी ट्यूटर या व्यक्ति की सेवाएं नहीं लेंगे। यह भी दिशानिर्देश हैं कि प्रत्येक कोचिंग सेंटर की ऐसी वेबसाइट होगी जिसमे ट्यूटर्स की योग्यता, पाठ्यक्रम/पाठ्यचर्या, पूरा होने की अवधि, छात्रावास सुविधाएं (यदि कोई हो) और ली जाने वाली फीस, आसान निकास निति, शुल्क वापसी नीति तथा भर्ती किये गए छात्रों की संख्या के अद्यतन विवरण होंगे। दिशानिर्देशों के उल्लंघन पर कोचिंग सेंटर को दण्डित किये जाने का प्रावधान भी किया गया है। इसके लिए एक सक्षम प्राधिकारी होगा जिसके पास सिविल न्यायालयों की शक्ति होगी। सक्षम प्राधिकारी के पास वे शक्तियां होगी जो किसी भी मुक़दमे पर विचार करने के लिए सिविल प्रक्रिया संहिता के तहत न्यायालों में निहित है। पंजीकरण या सामान्य शर्तों के कसी भी नियम और शर्त के उल्लंघन पर कोचिंग सेंटर पर पहले अपराध के लिए 25 हजार रूपया जुर्माना और दूसरी बार अपराध के लिए एक लाख रुपया जुर्माना तथा बाद के अपराध के लिए पंजीकरण रद्द करने की व्यवस्था की गई है। इन दिशानिर्देशों की अनुपालना राज्य सरकारों पर निर्भर करेगी और यह देखना दिलचस्प होगा कि वे किस प्रकार ताकतवर और धन-बल का प्रभाव रखने वाले कोचिंग केंद्र चलाने वालों से निबटती हैं। कोचिंग सेंटरों के संचालक इन दिशानिर्देशों से चिंतित नज़र नहीं आ रहे हैं। उनका कहना है कि अभी यह सिर्फ प्रस्ताव है। इसे लागू करने से पहले कई चरणों पर बातचीत की जाएगी। इसमें कई बदलाव होंगे जिसके बाद इसे लागू किया जाएगा। अंततः यह राज्य सरकारों पर निर्भर करेगा है कि वह इन दिशानिर्देशों को इसे किस तरह से लागू करवाती हैं।

कोचिंग सेंटरों के जाल में नई पीढ़ी पूरी तरह जकड़ी हुई है। खुद सरकार का शिक्षा नीति 2020 का दस्तावेज़ इस तथ्य को स्वीकार करता है कि स्पष्ट शिक्षा नीति के अभाव में अनियमित कोचिंग संस्थानों की संख्या में वृद्धि हुई है। राजस्थान के कोटा शहर को ही ले लें जहां के कोचिंग केंद्रों में, औपचारिक स्कूली शिक्षा को छोड़कर, इंजीनियरिंग या चिकित्सा के एक विशिष्ट संस्थान में प्रवेश पाने के अपने सपने साकार करने के लिए हर साल लगभग ढाई लाख छात्र आते हैं। यह सिर्फ एक शहर की बात है। राजस्थान तथा देश के अन्य शहरों में भी यह संस्कृति बलवती हो रही है जिनमें कितने लाख छात्र अध्ययनरत है उसका अंदाजा लगाया जा सकता है। यह समझने की जरूरत है कि स्कूली शिक्षा के औपचारिक ढांचे को कमजोर करने की कीमत पर ये कोचिंग संस्थान क्यों फल-फूल रहे हैं? यह तथ्य है कि प्रवेश परीक्षाएं अत्यधिक प्रतिस्पर्धी हैं। उदाहरण के लिए, 2023 में, सरकार द्वारा संचालित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों और राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थानों में 41,339 सीटों के लिए 11 लाख से अधिक छात्रों ने जेईई परीक्षा में भाग लिया और सरकारी मेडिकल कॉलेजों में उपलब्ध 56,283 सीटों के लिए 22 लाख से अधिक ने एनईईटी में भाग लिया। देश के हैदराबाद, विजयवाड़ा, विशाखापत्तनम, चेन्नई और दिल्ली में ऐसे कोचिंग दिग्गजों का उदय हुआ है, जो प्रवेश परीक्षा परिणामों और बाजार को नियंत्रित करते हैं। दिलचस्प तथ्य यह भी है कि इन कोचिंग संस्थानों में न केवल भारत से बल्कि विदेशों से भी पूंजी निवेश होता है। शिक्षा कारोबार का यह बड़ा बाज़ार खड़ा हो गया है। यह सभी मानते हैं कि इस कोचिंग संस्कृति से बच्चों पर अनुचित दबाव बढ़ गया है जिसके परिणामस्वरूप विद्यार्थियों द्वारा आत्महत्या किये जाने की घटनाओं में चिंताजनक वृद्धि हुई है।

> **छात्रों को जीवन में असफल होने के बारे में हमेशा तैयार रहना चाहिए। असफलता जीवन का एक स्वाभाविक हिस्सा है। हर कोई कभी-न-कभी असफल होता है। यह महत्वपूर्ण है कि छात्र असफलता को एक अवसर के रूप में देखें, सीखने और बढ़ने का एक अवसर।**

नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के 2020 के आंकड़ों से पता चलता है कि देश में लगभग 8.2 फीसदी छात्र आत्महत्या कर लेते हैं। विद्यार्थी का अधिकांश बचपन प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी में लग जाता है, जो कभी-कभी कक्षा छह से शुरू हो जाती है। बच्चों को घर की सुख-सुविधाओं से दूर धकेल दिया जाता है। इन संस्थानों में विद्यार्थियों को सवालों के जवाब रटाने और उनकी नियमित कड़े टेस्ट लेने की एक पद्धति विकसित हो गई है जिसके दबाव में ही बच्चों की आत्महत्याओं की खबरें हमें पढ़ने को मिलती हैं। आमतौर पर, इन स्कूलों को 'डमी' स्कूल कहा जाता है, यह शब्द कागज पर स्कूलों को दर्शाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। एक बार जब कोई बच्चा ऐसे डमी स्कूल में भर्ती हो जाता है, तो उनका अधिकांश समय प्रवेश परीक्षाओं के लिए कोचिंग में व्यतीत होता है, जो अगले पांच से सात वर्षों के लिए निर्धारित होती हैं। कोचिंग करने वाले छात्रों की आत्महत्या की समस्या के मूल में समाजशास्त्री उनके सामाजिक जीवन की कमी मानते हैं, क्योंकि उनके लिए दिन बहुत जल्दी शुरू होता है और देर रात तक खत्म होता है, जिसमें उन्हें सांस लेने की भी फुरसत नहीं मिलती। छात्रों को कक्षाओं में लगभग 13 घंटे तक बांधे रखा जाता है, जिससे स्व-अध्ययन, खेल गतिविधियों या अन्य लोगों से मेलजोल के लिए कोई समय नहीं बचता है जिसे चिकित्सा विज्ञान एक स्वस्थ व्यक्ति बनाने के लिए जरूरी मानता है। तीन महीने पहले कोचिंग सेंटरों को नियंत्रित किये जाने की मांग वाली एक याचिका पर सुप्रीम कोर्ट की एक बेंच ने कोचिंग सेंटरों को निर्देश जारी करने से इनकार कर दियाथा। अदालत के जजों का कहना था कि इन मामलों के पीछे माता-पिता का दबाव होता है। इंजीनियरिंग, मेडिकल और अन्य संयुक्त प्रवेश परीक्षा जेईई, राष्ट्रीय पात्रता प्रवेश परीक्षा एनईईटी, सामान्य प्रवेश परीक्षा कैट, आदि जैसी व्यावसायिक परीक्षाओं में सफलता के लिए माता-पिता को बच्चों की कोचिंग ही राह दिखती है।यह आग्रह विद्यार्थी को उच्च माध्यमिक विद्यालय की शिक्षा के अनुभव से तो वंचित करता ही है उसे अपने कीमती बचपन से भी वंचित करता है। माता-पिता अपने बच्चों को उनके समृद्ध बचपन और युवावस्था के अनुभव से दूर करके कोचिंग संस्थानों के नियंत्रित वातावरण में रखते हैं, और उन्हें अपने साथियों, परिवार तथा अन्य सामाजिक वातावरण से अलग-थलग करते हैं। वे भूल जाते हैं कि एक खुश और संतुष्ट बच्चा ही वास्तव में एक खुशहाल समाज और राष्ट्र की पहचान होता है।

शिक्षाविदों को नहीं लगता कि कोचिंग सेंटरों के लिए जारी केंद्र के ये दिशानिर्देश कोई संरचनात्मक बदलाव ला पाएंगे। उनका तो यह आरोप भी है कि इन दिशानिर्देशों से सरकार कोचिंग संस्कृति को मान्यता देते हुए उसे वैधता प्रदान कर रही है। उनकी खिन्नता इस बात पर है कि एक तरफ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कोचिंग संस्कृति को हानिकारक बताती है और उसके पनपने के लिए "माध्यमिक विद्यालय परीक्षाओं की प्रणाली" सहित बोर्ड परीक्षाओं और प्रवेश परीक्षाओं को मानते हुए वर्तमान परीक्षा प्रणाली के पैटर्न में सुधारों की सिफारिश करती है जिससे कि कोचिंग लेने की जरूरत ही न रहे, वहीं दूसरी तरफ उसके तहत जारी दिशानिर्देश कोचिंग संस्कृति को वैध बनाने के लिए कदम उठाये जा रहे हैं। कोचिंग सेंटर चलाने के लिए न्यूनतम मानकों का सुझाव देकर यह नीति उसी कोचिंग संस्कृति को मान्यता प्रदान करने का उद्यम कर रही है जिसे वह हानिकारक मानती है। नई शिक्षा नीति से माध्यमिक शिक्षा के साथ साथ उच्च शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश की परीक्षाओं में सक्रिय सुधारों की उम्मीद की जाती थी। मगर उसकी जगह यह यह दिशानिर्देश उसी से मुंह चुराते हैं। अनियंत्रित और गैर मान्यताप्राप्त कोचिंग संस्थानों का करोड़ों रुपयों का बाज़ार अब औपचारिक मान्यता के साथ वैध बन जायेगा। सरकार सिर्फ कोचिंग सेंटरों को विनियमित करने की बात करती है मगर उन्हें समाप्त करने के बारे में चुप हैं। दिशानिर्देश केवल यह कहते हैं कि कोचिंग संस्थानों में कक्षाएं स्कूल के घंटों के दौरान नहीं लगाई जाएंगी और इन संस्थानों को स्कूल के घंटों के बाद 5 घंटे तक कक्षाएं चलाने की अनुमति दी जाएगी। ज्यादातर लोग कोचिंग सेटरों के खिलाफ हैं, लेकिन प्रतिस्पर्धा के इस दौर में छात्रों के पास इन कोचिंग सेंटरों में जाने के अलावा और कोई विकल्प नहीं है। इस मुद्दे पर सभी हितधारकों, समाजशास्त्रियों और शिक्षाविदों के बीच गंभीर बहस और चर्चा की आवश्यकता है। इसके लिए ऐसे दिशानिर्देशों जैसे दिखावटी प्रयासों की जगह मजबूत और ईमानदार कदम उठाये जाने की आवश्यकता है। यह काम राज्यों के स्तर पर होना है क्योंकि भले ही शिक्षा संविधान की समवर्ती सूची में है मगर शिक्षा का असल काम राज्यों को ही करना होता है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

मोदी सरकार विश्वगुरू भारत की संकल्पना साकार करेगी

डॉ. सतीश पूनिया

'तीसरी बार मोदी सरकार' और 'अबकी बार चार सौ पार' यह महज नारे नहीं है। पिछले दस वर्षों में मोदी सरकार के स्वर्णिम कार्यकाल के बाद आम जनता का मूड समझा जा सकता है। भारतीय जनता पार्टी का शीर्ष नेतृत्व जब अपने कार्यकर्ताओं के लिए टारगेट तय करता है, तो निश्चित ही उसके पीछे एक मजबूत आधार होता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पार्टी कार्यकर्ताओं को आगामी लोकसभा चुनावों में पार्टी के लिए 370 सीटें जीतने का लक्ष्य दिया है और एनडीए को चार सौ पार का टारगेट निश्चित किया है। पार्टी के लिए आगामी लोकसभा चुनाव में इस रोमांचकारी लक्ष्य ने पार्टी के कार्यकर्ताओं में ऊर्जा का संचार कर दिया है।

बिलकुल ग्राउंड जीरो की बात करूं तो पिछले दिनों राजस्थान के बीकानेर संभाग के लोकसभा क्षेत्रों का कार्ययोजना दायित्व संभालने के बाद आम लोगों और पार्टी के कार्यकर्ताओं से मिलने का अवसर मिला।

आम जनता और पार्टी कार्यकर्ताओं में मोदी सरकार के प्रति जिस तरह का आत्मीय भाव है, उससे हम कार्यकर्ताओं को यह लक्ष्य बहुत बौना लगता है और जनता एवं कार्यकर्ताओं का यही जोश मुझे तब दिखा जब पार्टी ने मुझे कुछ महीने पहले ही यूपी के चार लोकसभा क्षेत्रों की संगठनात्मक बैठकों के लिये भेजा था।

हाल ही में राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में बनी भाजपा की सरकारों से यह और मजबूती से साबित हो गया कि जनता का भरोसा मोदी के नेतृत्व के प्रति दिनों-दिनों बढ़ता ही जा रहा है।

मोदी सरकार का तीसरा कार्यकाल समृद्ध और विकसित भारत की आगामी एक हजार साल की नींव रखेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल में लोकसभा में अपने ऐतिहासिक भाषण में भी कहा था कि-"मैं देश को अगले हजार वर्षों तक समृद्ध और सिद्धि के शिखर पर देखना चाहता हूँ। और तीसरा कार्यकाल अगले एक हजार वर्षों के लिए एक मजबूत नींव रखने का कार्यकाल बनेगा।" प्रधानमंत्री के संकल्प के बारे में देश की जनता जानती है कि वह जब संकल्प लेते हैं तो उसे पूरा करके ही दम लेते हैं।

मोदी सरकार के पहले कार्यकाल स्वच्छ भारत, उज्ज्वेमला, आयुष्मालन भारत, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, जीएसटी और डिजिटल इंडिया जैसे ऐतिहासिक अभियान हाथ में लिए गए। इन संकल्पों में मिली सफलता ने दूसरे कार्यकाल में जनता ने तीन सौ पार का आशीर्वाद दिया। दूसरे कार्यकाल में संकल्पों और वचनों की पूर्ति का कार्यकाल रहा है। ऐसे संकल्प जो भारतीय जनता पार्टी की स्थापना से लेकर अभी तक हमारे एजेंडे में थे।

वर्ष 2019 से पहले कौन सोच सकता था कि जम्मू-कश्मीर से धारा 370 इस तरह धराशायी हो जाएगी। कौन सोच सकता था कि अयोध्या में भगवान रामलला का ऐसा भव्य मंदिर स्थापित होगा कि पूरी दुनिया के हिंदुओं की आकांक्षाओं की पूर्ति करेगा।

हमारे जिन संकल्पों पर पूरी जनता की दृष्टि थी, उन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दूसरे कार्यकाल में पूर्ण किया। जिन उपलब्धियों का देश लम्बे समय से इंतजार कर रहा था वो सारे काम हमने दूसरे कार्यकाल में पूरे होते देखे हैं।

अबसे एक दो महीनों बाद, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का तीसरा कार्यकाल शुरू होगा तो विश्वास कीजिए विश्वगुरू भारत की जो हमारी संकल्पना है, वह निश्चित ही पूर्ण होगी और इसके लिए राजस्थान सहित पूरे देश की जनता ने भी अपना संकल्प कर लिया है।

मोदी के संकल्प को पिछले दस वर्ष में हुए अभूतपूर्व कार्यों और उपलब्धियों की कसौटी पर तौला जा सकता है। सामाजिक, आर्थिक, सामरिक, अंतरिक्ष, राजनैतिक, अंतरराष्ट्रीय संबंधों से लेकर कानून व्यवस्था, आतंक, आंतरिक सुरक्षा, केंद्र और राज्य संबंध, हर क्षेत्र में मोदी सरकार की उपलब्धियां खुद गवाही देती हैं, कि देश ने पिछले एक दशक में कितनी ऊंचाइयां प्राप्त कर ली है और कितनी तेजी से आगे बढ़ रहा है।

दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होना, कोई सामान्य संकल्प की परिणति नहीं हो सकती है। 25 करोड़ लोगों को गरीबी के दुष्चक्र से बाहर लाया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी अपने संबोधन में कहा कि गरीब को अगर साधन, संसाधन और स्वाभिमान मिले तो उसमें गरीबी को परास्त करने की अथाह सामर्थ्य है।

यह प्रधानमंत्री का ही संकल्प था जिसके कारण देश में आज पचास करोड़ गरीबों का बैंक में खाता खुला। चार करोड़ गरीबों को पक्का घर मिला, 55 करोड़ से अधिक लोगों को आयुष्मान भारत कार्ड से उनके अच्छे स्वास्थ्य की गारंटी दी गई। ग्यारह करोड़ से अधिक परिवारों को पीने का साफ पानी मिलने लगा।

राजस्थान में पिछले कई दशकों से लंबित पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना-ईआरसीपी को मूर्त रूप देकर राजस्थान के लोगों की लंबी प्रतीक्षा को समाप्त कर दिया। हर संकल्प को सिद्धि तक पहुंचाने में मोदी सरकार चौबीसों घंटे और बारह महीने काम कर रही है।

पिछले एक दशक में देश में किसी भी हिस्से में कोई छोटी-बड़ी आतंकी घटना नहीं हुई। नक्सलवाद मरणासन्न अवस्था में है। कश्मीर घाटी में आतंकियों का लगभग सफाया हो चुका है और वहां अब पर्यटन की बहार है। आतंकवाद पर भारत की बातें पूरी दुनिया में गंभीरता से सुनी जाती है। भारत की आतंकवाद के प्रति जीरो टॉलरेंस की नीति पर चलने के लिए विश्व के तमाम देश चलने लगे हैं।

नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय सेना पहले से कई गुना सशक्त हुई है। यह सब वे बातें हैं, जिनसे आम भारतीय का आत्मविश्वास कई गुना बढ़ा है। पिछले दिनों एक निमंत्रण पर बहरीन जाना हुआ। वहां बड़ी संख्या में अप्रवासी भारतीयों से मिलना हुआ। उन अप्रवासी भारतीय बंधुओं से बातचीत के अनुभव में भी यही बात सामने आई। उनके भीतर आत्मगौरव और आत्मविश्वास का भाव उनकी बातचीत में प्रकट हो रहा था।

मोदी ने देश के युवाओं के समक्ष वर्ष 2047 तक विकसित भारत के सपने की तस्वीर रखी है। वर्ष 2014 से 2024 के बीच पली बढ़ी पीढ़ी जानती है कि देश के लिए क्या महत्वपूर्ण है। वह जागरूक है और देश की प्राथमिकताओं को जानती और समझती है। प्रधानमंत्री ने पार्टी के मैनिफेस्टो में युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए नमो एप पर उनके सुझाव आमंत्रित किए हैं। मोदी सरकार राष्ट्र के नव निर्माण में युवाओं की भूमिका को हमेशा प्राथमिकताओं में रखती हैं। देशभर में बड़ी संख्या स्टार्टअप्स और उनमें में भी सौ से ज्यादा युनिकॉर्न स्टार्टअप्स के पीछे भारत की युवा शक्ति ही है।

देश का उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम हरेक कोना और समाज का हर वर्ग इस वक्त नरेन्द्र मोदी के मजबूत नेतृत्व में देश के आत्मगौरव और आत्मविश्वास का साक्षी है। वह जानता है कि देश का नेतृत्व किन हाथों में सुरक्षित है। इसलिए उसने तय कर लिया है कि यही समय है सही समय है।

डॉ. सतीश पूनिया,
(लेखक- भाजपा के वरिष्ठ नेता और भाजपा राजस्थान के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष)

शिक्षण संस्थानों में आत्महत्या के कारण और समाधान

प्रो. अशोक शर्मा

शिक्षण संस्थानो. कोचिंग संस्थानों में छात्राओं की आत्महत्या एक गंभीर समस्या है। पिछले कुछ वर्षों में, कोटा में छात्राओं की आत्महत्या के कई मामले सामने आए हैं। इन आत्महत्याओं के पीछे कई कारण हैं, जिनमें अत्यधिक प्रतिस्पर्धा, मानसिक स्वास्थ्य देखभाल की कमी, और परिवार और समाज का दबाव शामिल हैं। अत्यधिक प्रतिस्पर्धा कोटा को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए एक प्रमुख केंद्र माना जाता है। यहां देश भर से प्रतिभाशाली छात्र प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं के लिए तैयारी करने के लिए आते हैं। इस अत्यधिक प्रतिस्पर्धा के कारण छात्राओं पर बहुत अधिक दबाव पड़ता है। उन्हें सफल होने के लिए कड़ी मेहनत करनी होती है और कभी-कभी वे सफल नहीं हो पाते हैं, जिससे वे निराश और तनावठास्त हो जाती हैं।

मानसिक स्वास्थ्य देखभाल की कमी कोचिंग संस्थानों में छात्राओं को मानसिक स्वास्थ्य देखभाल की पर्याप्त सुविधा नहीं मिलती है। छात्राओं को अक्सर अकेलापन और अलगाव महसूस होता है। वे अपने परिवार और दोस्तों से दूर होती हैं और उनके पास अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का कोई स्वस्थ तरीका नहीं होता है।

परिवार और समाज का दबाव छात्राओं पर परिवार और समाज का दबाव भी आत्महत्या का कारण बन सकता है। माता-पिता अक्सर अपने बच्चों से उच्च अपेक्षाएं रखते हैं और उन्हें सफल होने के लिए दबाव डालते हैं। यह छात्राओं पर अतिरिक्त तनाव और दबाव डाल सकता है।

छात्रों को जीवन में असफल होने के बारे में हमेशा तैयार रहना चाहिए। असफलता जीवन का एक स्वाभाविक हिस्सा है।

हर कोई कभी-न-कभी असफल होता है। यह महत्वपूर्ण है कि छात्र असफलता को एक अवसर के रूप में देखें, सीखने और बढ़ने का एक अवसर।

छात्रों को असफलता के बारे में तैयार रहने के लिए निम्नलिखित चीजें करनी चाहिए: अपने लक्ष्यों को यथार्थवादी रखें। अपने आप को बहुत अधिक दबाव न डालें कि आप हमेशा सफल होंगे।

अपने आप को स्वीकार करें। यह याद रखें कि आप एक व्यक्ति हैं, और आप हमेशा सही नहीं होंगे।

गलतियों से सीखें। जब आप असफल होते हैं तो हार न मानें। अपनी गलतियों से सीखें और आगे बढ़ें।

छात्रों को असफलता के बारे में तैयार रहना चाहिए, क्योंकि यह उन्हें जीवन में सफल होने में मदद कर सकता है।

असफलता से सीखने से छात्र अधिक मजबूत और अधिक लचीला बन जाते हैं। वे चुनौतियों का सामना करने के लिए बेहतर तैयार हो जाते हैं और वे हार नहीं मानते हैं।

यहां कुछ विशिष्ट तरीके दिए गए हैं जिनसे छात्र असफलता के बारे में तैयार हो सकते हैं: अपने कौशल और क्षमताओं का मूल्यांकन करें। यह जानने के लिए कि आप क्या कर सकते हैं, और क्या नहीं, यह महत्वपूर्ण है।

अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक योजना बनाएं। यह योजना को लागू करने के लिए तैयार रहें, और यदि आवश्यक हो तो इसे समायोजित करने के लिए तैयार रहें।

अपने आप को समर्थन दें। अपने दोस्तों और परिवार से मदद मांगने में संकोा न करें। छात्रों को याद रखना चाहिए कि असफलता एक अंत नहीं है। यह केवल एक शुरुआत है। हां, छात्रों को जीवन में असफल होने के बारे में हमेशा तैयार रहना चाहिए। असफलता जीवन का एक स्वाभाविक हिस्सा है, और यह सफलता की ओर ले जाने वाला एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। असफलता से सीखना और आगे बढ़ना महत्वपूर्ण है। छात्रों को असफलता के लिए तैयार करने के लिए, शिक्षकों और माता-पिता को निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए: छात्रों को यह समझाएं कि असफलता सामान्य है। हर कोई कभी-कभी असफल होता है।

छात्रों को असफलता से सीखने के महत्व पर जोर दें।

असफलता से हम अपने कमजोरियों को पहचानने और उन्हें सुधारने के लिए सीख सकते हैं।

छात्रों को असफलता के बाद फिर से खड़े होने और आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। असफलता कोई अंत नहीं है, यह केवल एक शुरुआत है।

छात्रों को असफलता के लिए तैयार करने के लिए, वे निम्नलिखित बातें कर सकते हैं: अपने लक्ष्यों को यथार्थवादी बनाएं। बहुत उच्च लक्ष्य निर्धारित करना निराशाजनक हो सकता है।

अपने काम के लिए तैयार रहें। कड़ी मेहनत करने और अपनी पूरी कोशिश करने से आपको असफलता से कम बचने में मदद मिलेगी।

असफलता से सीखने के लिए खुले रहें। जब आप असफल होते हैं, तो अपने आप को खुद पर या दूसरों पर दोष न दें। अपनी गलतियों से सीखें और आगे बढ़ें। छात्रों को असफलता के लिए तैयार करना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उन्हें जीवन में सफल होने में मदद कर सकता है।

असफलता से सीखकर, छात्र अपने कमजोरियों को पहचान सकते हैं और उन्हें सुधार सकते हैं। वे कड़ी मेहनत करने और अपनी पूरी कोशिश करने के लिए भी प्रेरित हो सकते हैं।

कोचिंग संस्थानों में छात्राओं की आत्महत्या को रोकने के लिए कई उपाय किए जा सकते हैं। इनमें शामिल हैं: प्रतिस्पर्धा को कम करना: सरकार को प्रतियोगी परीक्षाओं की संख्या को कम करने और प्रवेश परीक्षाओं को अधिक समावेशी बनाने के लिए कदम उठाने चाहिए। इससे छात्राओं पर दबाव कम होगा और वे अपनी पसंद के क्षेत्र में प्रवेश पाने के लिए अधिक अवसर प्राप्त करेंगे।

मानसिक स्वास्थ्य देखभाल में सुधार: कोचिंग संस्थान को मानसिक स्वास्थ्य देखभाल में सुधार के लिए कदम उठाने चाहिए। उन्हें छात्राओं को मानसिक स्वास्थ्य परामर्श और सहायता प्रदान करनी चाहिए।

परिवार और समाज को जागरूक करना: छात्राओं को आत्महत्या के जोखिमों के बारे में जागरूक करने के लिए परिवार और समाज को जागरूक करना चाहिए। उन्हें यह समझाना चाहिए कि आत्महत्या कोई समाधान नहीं है और इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं।

कोचिंग संस्थानों में छात्राओं की आत्महत्या को रोकने के लिए सभी हितधारकों को एक साथ काम करने की आवश्यकता है।

–प्रो. अशोक शर्मा,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, वैदिक विश्वविद्यालय निंबहारा, निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर, अध्यक्ष आईएसएलएस, प्रिसिडेंट सोशल रिसर्च फाउंडेशन

गोबर के कागज से बनाई कुमकुम पत्रिका

■ गोसंरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए अनूठी पहल

जालोर, (कासं)। भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष एवं प्रतिष्ठित व्यापारी श्रवणसिंह राव बोरली के पुत्र विकास सिंह के 18 फरवरी को होने वाले विवाह एवं 25 फरवरी को आशीर्वाद समारोह निमित्त गौसंरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए गौमय कागज से पत्रिका बनाने की अनूठी पहल की। भाजपा जिलाध्यक्ष श्रवण सिंह राव बोरली ने बताया की वर्तमान समय में लोगों द्वारा गौवंश का संरक्षण केवल गौशालाओं के माध्यम से करते हैं, लेकिन गौशालाओं में अत्यधिक गौवंश होने के कारण गौपालकों पर आर्थिक दबाव के साथ-साथ उनके

संरक्षण में कई प्रकार की समस्याएं आती हैं। गोबर से बने कागज के उत्पादन में गौवंश के संरक्षण में होने वाली आर्थिक समस्याओं का समाधान संभव हैं, जिसके कारण गौशालाओं एवं गौपालकों को आर्थिक सहयोग होना संभव हैं।

पर्यावरण संरक्षण जैसे गंभीर मुद्दें के लिए कई संस्थाएं कार्यरत हैं, इसी क्रम में गोबर से बना यह गौमय कागज पूर्णतः पर्यावरण हेतु शृद्ध हैं एवं इसका पुनः उपयोग भी जा सकता हैं। भाजपा जिलाध्यक्ष श्रवणसिंह राव बोरली के सुपुत्र विकास सिंह के 18 फरवरी को होने जा रहे विवाह की पत्रिका जयपुर स्थित गौकृति के प्रधान संपादक भीमराज ने बताया कि गोमय पेपर की कीमत सामान्य कागज के बराबर हैं। उन्होनें बताया कि सामान्य कागज के 30 पेड़ों को काटने पर एक टन कागज तैयार किया जाता हैं। लेकिन गाय के गोबर और अन्य सामग्री के उपयोग से बने कागज की पत्रिका आर्थिक एवं पर्यावरण के लिए लाभदायक हैं। जालोर भाजपा के जिलाध्यक्ष श्रवण सिंह राव बोरली ने अपने पुत्र के विवाह की कुमकुम पत्रिका गौबर के कागज से बनाई।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 14 फरवरी, 2024

माघ मास, शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2080, रेवती नक्षत्र दिन 10:43 तक, शुभ योग सांय 7:38 तक, बालव करण दिन 12:10 तक, चन्द्रमा आज 10:43 से मेष राशि में संचार करेगा। **ग्रह स्थिति:** सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-मीन, मंगल-मकर, बुध-मकर, गुरू-ममीन, शुक्र-मकर, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

कुमार योग दिन 10:43 से सूर्योदय तक है। रवियोग दिन 10:43 से आरम्भ होगा। महापत योग रात्रि 8:20 से रात्रि 12:20 तक है। आज बसंत पंचमी, सरस्वती पूजन, श्री पंचमी, बागीश्वरी जयन्ती, तक्षक पूजा, रतिकाम महोत्सव है और पंचक दिन 10:43 तक है। आज सेन्ट वेलेन्टाइन दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:55 तक, शुभ 11:18 से 12:41 तक, चर 3:27 से 4:50 तक, लाभ 4:50 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:08, सूर्यास्त 6:13

मेष
वर्तमान में चल रहे मानसिक तनाव दूर होने लगेंगे। मनःस्थिति में सुधार होगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
आर्थिक/वित्तिय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात घर-गृहस्थी के खर्चों में वृद्धि हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कर्क
आज परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।

सिंह
दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कन्या
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज यात्रा टालना ठीक रहेगा।

तुला
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मीन
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।